

प्रवास

प्रकार, कारण और परिणाम



छत्तीसगढ़ के भिलाई इस्पात संयंत्र में एक अभियंता के रूप में कार्य कर रहे रामबाबू का जन्म बिहार के भोजपुर जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था। 12 वर्ष की आरंभिक आयु में माध्यमिक स्तर का अध्ययन पूरा करने के लिए वह निकटवर्ती कस्बे आरा में चला गया। वह अपनी अभियांत्रिकी की डिग्री के लिए झारखंड में स्थित सिंदरी गया और बाद में भिलाई में उसे नौकरी मिल गई, जहाँ वह पिछले 31 वर्षों से रह रहा है। उसके माता-पिता अशिक्षित थे और उनकी आजीविका का एकमात्र स्रोत कृषि से होने वाली अल्प आय थी। उन्होंने अपना सारा जीवन उस गाँव में गुजार दिया।

रामबाबू के तीन बच्चे हैं जिन्होंने अपनी माध्यमिक स्तर की शिक्षा भिलाई में प्राप्त की और फिर उच्चतर शिक्षा के लिए विभिन्न स्थानों पर गए। पहला बच्चा इलाहाबाद और मुंबई में पढ़ा और वर्तमान में दिल्ली में एक वैज्ञानिक के रूप में काम कर रहा है। दूसरे बच्चे (लड़की) ने अपनी उच्चतर शिक्षा भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से ग्रहण की और वर्तमान में वह संयुक्त राज्य अमेरिका में काम कर रही है। तीसरी, अपनी पढ़ाई पूरी कर शादी के बाद सूरत में बस गई।

यह कहानी केवल रामबाबू और उसके बच्चों की नहीं है, ऐसे गमनागमन अधिक से अधिक वैश्विक प्रवृत्ति वाले बनते जा रहे हैं। लोग एक गाँव से दूसरे गाँव, गाँवों से शहरों, छोटे शहरों से बड़े शहरों और एक देश से दूसरे देश में जा रहे हैं।

अपनी पुस्तक 'मानव भूगोल के मूलभूत सिद्धांत' में आप प्रवास की संकल्पना और परिभाषा को पहले ही समझ चुके हैं। प्रवास दिक् और काल के संदर्भ में जनसंख्या के पुनर्वितरण का अभिन्न अंग और एक महत्वपूर्ण कारक हैं। भारत देश में मध्य और पश्चिमी एशिया तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया से आने वाले प्रवासियों की तरंगों का साक्षी रहा है। वास्तव में भारत का इतिहास देश के विभिन्न भागों में प्रवासियों की तरंगों के एक के बाद एक आ-आकर बसने का इतिहास है। एक नामी कवि फ़िराक गोरखपुरी के शब्दों में :

“सर ज़मीन-ए-हिन्द पर अक्वाम-ए-आलम के फ़िराक
कारवाँ बसते गए, हिन्दोस्तान बनता गया”

(विश्व के सभी भागों से लोगों के कारवाँ भारत में आते रहे और बसते रहे और इसी से भारत की विरचना हुई।)

इसी प्रकार, भारत से भी बहुत बड़ी संख्या में लोग बेहतर अवसरों की तलाश में विभिन्न स्थानों विशेष रूप से मध्य पूर्व

और पश्चिमी यूरोप के देशों अमेरिका, आस्ट्रेलिया और पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया में प्रवास करते रहे।

भारतीय प्रसार (Indian Diaspora)

उपनिवेश काल (ब्रिटिश काल) के दौरान अंग्रेजों द्वारा उत्तर प्रदेश और बिहार से मॉरीशस, कैरेबियन द्वीपों (ट्रिनीडाड, टोबैगो और गुयाना) फिजी और दक्षिण अफ्रीका; फ्रांसीसियों और जर्मनों द्वारा रियूनियन द्वीप, गुआडेलोप, मार्टीनीक और सूरीनाम में, फ्रांसीसी तथा डच लोगों और पुर्तगालियों द्वारा गोवा, दमन और दीव से, अंगोला, मोजांबिक व अन्य देशों में करारबद्ध लाखों श्रमिकों को रोपण कृषि में काम करने के लिए भेजा था। ऐसे सभी प्रवास (भारतीय उत्प्रवास अधिनियम) गिरमित एक्ट नामक समयबद्ध अनुबंध के तहत आते थे। फिर भी, इन करारबद्ध मजदूरों के जीवन की दशाएँ दासों से बेहतर नहीं थीं।

प्रवासियों की दूसरी तरंग ने नूतन समय में व्यवसायियों, शिल्पियों, व्यापारियों और फैक्टरी मजदूरों के रूप में आर्थिक अवसरों की तलाश में निकटवर्ती देशों थाइलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया, ब्रूनई, इत्यादि देशों में व्यवसाय के लिए गए और यह प्रवृत्ति अब भी जारी है। 1970 के दशक में पश्चिम एशिया में हुई सहसा तेल वृद्धि द्वारा जनित श्रमिकों की माँग के कारण भारत से अर्ध-कुशल और कुशल श्रमिकों का नियमित बाह्य प्रवास हुआ। कुछ बाह्य प्रवास उद्यमियों, भंडार मालिकों, व्यवसायियों का भी पश्चिमी देशों में प्रवास हुआ।

प्रवासियों की तीसरी तरंग में डॉक्टरों, अभियंताओं (1960 के बाद) सॉफ्टवेयर अभियंताओं, प्रबंधन परामर्शदाताओं, वित्तीय विशेषज्ञों, संचार माध्यम से जुड़े व्यक्तियों और (1980 के बाद) अन्य समाविष्ट थे, जिन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और जर्मनी इत्यादि में प्रवास किया। इन व्यवसायियों ने सर्वाधिक शिक्षित, उच्चतम अर्जन करने वाले और सफलतम समूहों में से एक होने की विशिष्टता का आनंद लिया। उदारिकरण के पश्चात 90 के दशक में शिक्षा और ज्ञान आधारित भारतीय उत्प्रवासियों ने भारतीय प्रसार को विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली प्रसार में से एक बना दिया।

इन सभी देशों में भारतीय प्रसार अपने-अपने देशों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रवास

आप भारत में जनगणना से पहले ही परिचित हैं। इसमें देश में प्रवास के संबंध में सूचना होती है। वास्तव में प्रवास को 1881 ई. में भारत की प्रथम संचालित जनगणना से ही दर्ज करना आरंभ कर दिया गया था। इन आँकड़ों को जन्म के स्थान के आधार पर दर्ज किया गया था। परंतु 1961 की जनगणना में पहला मुख्य संशोधन किया गया था और उसमें दो घटक अर्थात् जन्म स्थान अर्थात् गाँव या नगर और (यदि अन्यत्र जन्मा है) तो निवास की अवधि सम्मिलित किए गए। इसके बाद 1971 में पिछले निवास के स्थान और गणना के स्थान पर रुकने की अवधि की अतिरिक्त सूचना को समाविष्ट किया गया। प्रवास के कारणों पर सूचना का समावेश 1981 की जनगणना में किया गया जिसका क्रमिक जनगणनाओं में संशोधन किया गया।

जनगणना में प्रवास पर निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाते हैं :

- क्या व्यक्ति इसी गाँव अथवा शहर में पैदा हुआ है? यदि नहीं, तब जन्म के स्थान की (ग्रामीण/नगरीय) स्थिति, ज़िले और राज्य का नाम और यदि भारत से बाहर का है तो जन्म के देश के नाम की सूचना प्राप्त की जाती है।
- क्या व्यक्ति इस गाँव या शहर में कहीं और से आया है? यदि हाँ, तब निवास के पूर्व स्थान के स्तर (ग्रामीण/नगरीय) ज़िले और राज्य का नाम और यदि भारत से बाहर का है तो देश के नाम के बारे में आगे प्रश्न पूछे जाते हैं।

इनके अतिरिक्त पिछले निवास स्थान से प्रवास के कारण और गणना के स्थान पर निवास की अवधि भी पूछी जाती है।

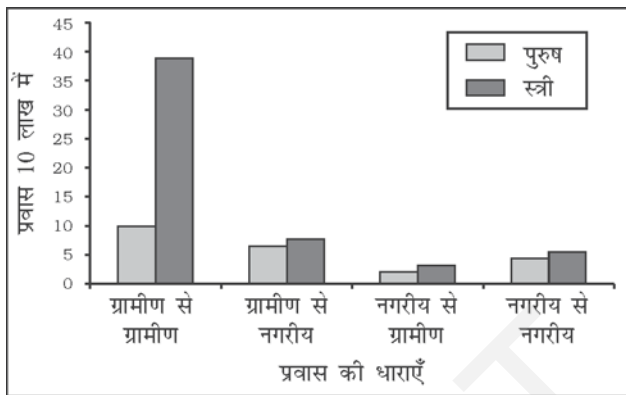
भारत की जनगणना में प्रवास की गणना दो आधारों पर की जाती है : (i) जन्म का स्थान, यदि जन्म का स्थान गणना के स्थान से भिन्न है (इसे जीवनपर्यंत प्रवासी के नाम से जाना जाता है); (ii) निवास का स्थान, यदि निवास का पिछला स्थान गणना के स्थान से भिन्न है (इसे निवास के पिछले स्थान से प्रवासी के रूप में जाना जाता है)। क्या आप भारत की जनगणना में प्रवासियों के अनुपात की कल्पना कर सकते हैं? 2001 की जनगणना के अनुसार देश के 102.9 करोड़ लोगों में से 30.7 करोड़ (30 प्रतिशत) की रिपोर्ट प्रवासियों के रूप में की गई थी जो अपने जन्म के स्थान से अलग रह रहे थे। यद्यपि निवास के (पिछले स्थान के संदर्भ में यह संख्या 31.5 करोड़ (31 प्रतिशत) थी।

क्रियाकलाप

प्रवास की स्थिति ज्ञात करने के लिए अपने पड़ोस के पाँच घरों का सर्वेक्षण कीजिए। यदि प्रवासी हैं तो पाठ में दी गई दो कसौटियों के आधार पर उन्हें वर्गीकृत कीजिए।

प्रवास की धाराएँ

आंतरिक प्रवास (देश के भीतर) और अंतर्राष्ट्रीय प्रवास (देश के बाहर और अन्य देशों से देश के अंदर) से संबंधित कुछ तथ्य यहाँ प्रस्तुत हैं। आंतरिक प्रवास के अंतर्गत चार धाराओं की पहचान की गई है : (क) ग्रामीण से ग्रामीण



चित्र 2.1 क : निवास के अंतिम स्थान के अनुसार अंतःराज्यीय प्रवास दर्शाती प्रवास की धाराएँ (अवधि 0-9 वर्ष) भारत, 2001

स्रोत : प्रवास सारणी, भारत की जनगणना, 2001

क्रियाकलाप

2001 की जनगणना के अनुसार अंतःराज्यीय और अन्तर-राज्यीय प्रवास को दर्शाने वाले चित्रों 2.1 क और 2.1 ख का परीक्षण कीजिए और ज्ञात कीजिए :

(क) दोनों चित्रों में ग्रामीण से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास करने वाली स्त्रियों की संख्या अधिक क्यों है?

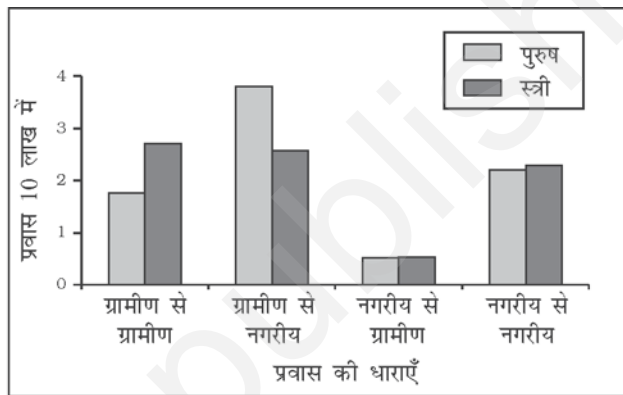
(ख) ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों में पुरुष प्रवास अधिक क्यों है?

(ख) ग्रामीण से नगरीय (ग) नगरीय से नगरीय और (घ) नगरीय से ग्रामीण। भारत में 2001 के दौरान पिछले निवास के आधार पर परिकल्पित 31.5 करोड़ प्रवासियों में से 9.8 करोड़ ने पिछले दस वर्षों में अपने निवास का स्थान बदल लिया है। इनमें से 8.1 करोड़ अंतःराज्यीय प्रवासी थे। इस धारा में स्त्री प्रवासी प्रमुख थीं। इनमें से अधिकांश विवाहोपरांत प्रवासी थीं।

अंतःराज्यीय और अन्तर-राज्यीय प्रवास की विभिन्न धाराओं में स्त्री और पुरुष प्रवासियों के वितरण को चित्र

2.1 क और 2.1 ख में प्रस्तुत किया गया है। इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है कि दोनों प्रकार के प्रवासों में थोड़ी दूरी के ग्रामीण से ग्रामीण प्रवास की धाराओं में स्त्रियों की संख्या सर्वाधिक है। इसके विपरीत आर्थिक कारणों की वजह से अंतर-राज्यीय प्रवास ग्राम से नगर धारा में पुरुष सर्वाधिक हैं।

आंतरिक प्रवास की इन धाराओं के अतिरिक्त भारत में पड़ोसी देशों से आप्रवास और उन देशों की ओर भारत से उत्प्रवास भी हुआ है। तालिका 2.1 में पड़ोसी देशों से प्रवासियों का ब्योरा प्रस्तुत करती है। जनगणना 2001 में अंकित है कि भारत में अन्य देशों से 50 लाख व्यक्तियों



चित्र 2.1 ख : निवास के अंतिम स्थान के अनुसार अंतर-राज्यीय प्रवास दर्शाती प्रवास की धाराएँ (अवधि 0-9 वर्ष) भारत, 2001

का प्रवास हुआ है। इनमें से 96 प्रतिशत पड़ोसी देशों से आए हैं : बांग्लादेश (30 लाख) इसके बाद पाकिस्तान (9 लाख) और नेपाल (5 लाख) इनमें तिब्बत, श्रीलंका, बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान और म्यांमार 1.6 लाख शरणार्थी भी समाविष्ट हैं। जहाँ तक भारत से उत्प्रवास का प्रश्न है, ऐसा अनुमान है कि भारतीय डायस्पोरा के लगभग 2 करोड़ लोग हैं जो 110 देशों में फैले हुए हैं।



पड़ोसी देशों से प्रवास 4,918,266 को 100 प्रतिशत मानते हुए तालिका 2.1 में दिए गए आँकड़ों को पाई आरेख द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

प्रवास में स्थानिक विभिन्नता

महाराष्ट्र, दिल्ली, गुजरात और हरियाणा जैसे राज्य उत्तर प्रदेश, बिहार इत्यादि जैसे अन्य राज्यों से प्रवासियों को आकर्षित करते हैं (ब्यौरे के लिए देखें परिशिष्ट 2.1) 23 लाख आप्रवासियों के साथ महाराष्ट्र का सूची में प्रथम स्थान है, इसके बाद दिल्ली, गुजरात और हरियाणा आते हैं। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश (-26 लाख) और बिहार (-17 लाख) वे राज्य हैं जहाँ से उत्प्रवासियों की संख्या सर्वाधिक है।

नगरीय समूहों में से बृहत् मुंबई में सर्वाधिक संख्या में प्रवासी आए। इसमें अंतःराज्यीय प्रवास का भाग सर्वाधिक है। यह अंतर मुख्य रूप से राज्य के आकार के कारण है जिसमें ये नगरीय समूह स्थित हैं।

तालिका 2.1 : भारत में सभी अवधियों में पड़ोसी देशों से पिछले निवास स्थान के अनुसार आप्रवासी

देश	आप्रवासियों की संख्या	आप्रवासियों का %
कुल अंतर्राष्ट्रीय प्रवास	5,155,423	100
पड़ोसी देशों से प्रवास	4,918,266	95.5
अफगानिस्तान	9,194	0.2
बांग्लादेश	3,084,826	59.8
भूटान	8,337	0.2
चीन	23,721	0.5
म्यांमार	49,086	1.0
नेपाल	596,696	11.6
पाकिस्तान	997,106	19.3
श्रीलंका	149,300	2.9

स्रोत : भारत की जनगणना, 2001

'Chalo Dilli' is mantra for migrants

Over 665 Come To City Every Day; Maximum From UP & Haryana, Not Bihar

Delhi	665
Mumbai	236
Bangalore	165
Chennai	121

Delhi	4.27%
Mumbai	2.65%
All-India	2.75%

More Sri Lankan refugees arrive

Migrant outflow: India No. 4
In Terms Of Inflow, It Doesn't Even Make It To Top Ten

Refugee rush increases at Rameswaram

As tension between government troops and the LTTE mounts in Sri Lanka, the influx of refugees in Rameswaram has increased. The number on Friday stood at 7,440, with a record 120 refugees arriving.

Be humane to refugees from Sri Lanka: PUCL

Ongoing war a human rights violation: K.G. Kannabiran

NET INWARD MIGRATION	NET OUTWARD MIGRATION
USA: 160	MEXICO: 400
AFGHANISTAN: 428	CHINA: 390
SPAIN: 405	PAKISTAN: 362
GERMANY: 220	INDIA: 280
CANADA: 210	IRAN: 271
UAE: 192	INDONESIA: 200
UK: 137	PHILIPPINES: 180
ITALY: 120	UKRAINE: 140
AUSTRALIA: 100	KAZHAKHSTAN: 120
RUSSIA: 80	SUDAN: 104

क्रियाकलाप

परिशिष्ट 2.1 में आप्रवास और उत्प्रवास के राज्यवार आँकड़े दिए गए हैं। भारत के सभी राज्यों के निवल प्रवास का परिकलन कीजिए।


प्रवास के कारण

लोग सामान्य रूप से अपने जन्म स्थान से भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। किंतु लाखों लोग अपने जन्म के स्थान और निवास को छोड़ देते हैं। इसके विविध कारण हो सकते हैं


जिन्हें बृहत् रूप से दो संवर्गों में रखा जा सकता है :

- प्रतिकर्ष कारक (Push factor)** जो लोगों को निवास स्थान अथवा उद्गम को छोड़वाने का कारण बनते हैं और
- अपकर्ष कारक (Pull factor)** जो विभिन्न स्थानों से लोगों को आकर्षित करते हैं।


भारत में लोग ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों में मुख्यतः गरीबी, कृषि भूमि पर जनसंख्या के अधिक दबाव, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा जैसी आधारभूत अवसंरचनात्मक सुविधाओं के अभाव इत्यादि के कारण प्रवास करते हैं। इन कारकों के अतिरिक्त




मैं आरिफ खान हूँ। मैं अपनी पत्नी और चार बच्चों के साथ गाँव में रहता हूँ। मैं यहाँ 30 रु. प्रतिदिन की दिहाड़ी पर खेतों में काम करता हूँ। यहाँ सभी 30 दिन काम नहीं मिलता। इसके साथ मैंने खेती के लिए पट्टे पर जमीन ले रखी है ताकि मैं अपने बच्चों को शिक्षित बना सकूँ। मेरी पत्नी बीमार है और तपेदिक से पीड़ित है। स्वास्थ्य सेवाओं की सुविधा के अभाव और पैसे की कमी के कारण मैं अपनी पत्नी का इलाज कराने में असमर्थ हूँ। प्रचलित परिस्थितियों ने मुझे भ्रमित कर रखा है।



मैं तमिलनाडु तट के मछुआरा समुदाय से सम्बन्ध रखने वाली सुब्लक्ष्मी हूँ। विध्वंसकारी सुनामी मेरे दो बच्चों को छोड़कर घर के सभी सदस्यों को बहा ले गई। सब कुछ नष्ट हो गया है। तब से मैं चेन्नई की गन्दी बस्ती में रह रही हूँ। मैं यहाँ एक घरेलू नौकरानी की तरह काम करती हूँ और मेरे बच्चे स्कूल जाते हैं तथा खाली समय में चिथड़े चुगने में मेरी मदद करते हैं। फिर भी मैं अपनी जगह को याद करती हूँ पर मैं वापिस नहीं जाऊँगी। उन राक्षसी तरंगों को मैं भुला नहीं सकती। मुझे अपने बच्चों का बचाव करना है।



मैं मोहन सिंह हूँ, लुधियाना में बिनाई वस्त्रों की फैक्टरी में काम करता हूँ। वहाँ मैं प्रतिदिन 8 घंटे काम करके 2000 रु. महीना लेता हूँ। मेरे पास समयोपरि (Overtime) से अतिरिक्त धन कमाने का अवसर है। यहाँ चिकित्सीय, शैक्षिक और मनोरंजनात्मक सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। फिर भी परिवार के सदस्यों और बच्चों की अनुपस्थिति व्यग्रता पैदा करती है। नौकरियों के अनेक अवसर हैं।



मैं मनीष गवारकर भंडारा से विज्ञान स्नातक हूँ। यहाँ मुंबई में मैं अपनी स्नातकोत्तर के साथ-साथ अंशकालिक नौकरी भी कर रहा हूँ। फिर भी यहाँ रहने की लागत अधिक है और लोगों को दूसरों के लिए फुरसत नहीं है। मैं मुंबई आया क्योंकि यह मेरा सपना था। यह नगर उच्च वेतन और बाहर जाने के बहुत सारे अवसर प्रदान करता है।

क्रियाकलाप

चार कहानियाँ प्रवासियों की भिन्न स्थितियों का वर्णन करती हैं।

आरिफ के लिए प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारकों की गणना कीजिए।

मोहन सिंह के कौन-से अपकर्ष कारक हैं?

सुब्लक्ष्मी और मनीष गवारकर की कहानियों का अध्ययन कीजिए। प्रवास के प्रकार, प्रवास के कारणों और उनके रहन-सहन की दशाओं के आधार पर उनके प्रकरणों की तुलना कीजिए।



बाढ़, सूखा, चक्रवातीय तूफान, भूकम्प, सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाएँ, युद्ध, स्थानीय संघर्ष भी प्रवास के लिए अतिरिक्त प्रतिकर्ष पैदा करते हैं। दूसरी ओर अपकर्ष कारक हैं, जो लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर आकर्षित करते हैं। नगरीय क्षेत्रों की ओर अधिकांश ग्रामीण प्रवासियों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण अपकर्ष कारक बेहतर अवसर, नियमित काम का मिलना और अपेक्षाकृत ऊँचा वेतन है। शिक्षा के लिए बेहतर अवसर, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ और मनोरंजन के स्रोत इत्यादि भी काफ़ी महत्वपूर्ण अपकर्ष कारक हैं।

चित्र 2.2 क तथा ख में पुरुषों और स्त्रियों के प्रवास के कारणों का अलग-अलग परीक्षण कीजिए। चित्रों के आधार पर यह देखा जा सकता है कि पुरुषों और स्त्रियों के लिए प्रवास के कारण भिन्न हैं। उदाहरण के तौर पर काम और रोज़गार पुरुष प्रवास के मुख्य कारण (38 प्रतिशत) रहे हैं जबकि यही कारण केवल 3 प्रतिशत स्त्रियों के लिए है। इसके विपरीत 65 प्रतिशत स्त्रियाँ विवाह के उपरांत अपने मायके से बाहर जाती हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण है, मेघालय इसका अपवाद है जहाँ स्थिति उलट है।

मेघालय में स्त्री विवाह प्रवास कानून क्यों भिन्न है?

इन विवाहों की तुलना में देश में पुरुष प्रवास केवल 2 प्रतिशत है।

प्रवास के परिणाम

प्रवास, क्षेत्र पर अवसरों के असमान वितरण के कारण होता है। लोगों में कम अवसरों और कम सुरक्षा वाले स्थान से अधिक अवसरों और बेहतर सुरक्षा वाले स्थान की ओर जाने की प्रवृत्ति होती है। बदले में यह प्रवास के उद्गम और गंतव्य क्षेत्रों के लिए लाभ और हानि दोनों उत्पन्न करता है। परिणामों को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और जनांकिकीय संदर्भों में देखा जा सकता है।

आर्थिक परिणाम

उद्गम प्रदेश के लिए मुख्य लाभ प्रवासियों द्वारा भेजी गई हुंडी हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों द्वारा भेजी गई हुंडियाँ विदेशी विनिमय के प्रमुख स्रोत में से एक हैं। सन् 2002 में भारत ने अंतर्राष्ट्रीय

प्रवासियों से हुंडियों के रूप में 110 खरब अमेरिकी डॉलर प्राप्त किए। पंजाब, केरल और तमिलनाडु अपने अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों से महत्वपूर्ण राशि प्राप्त करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की तुलना में आंतरिक प्रवासियों द्वारा भेजी गई हुंडियों की राशि बहुत थोड़ी है, किंतु यह उद्गम क्षेत्र की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हुंडियों का प्रयोग मुख्यतः भोजन, ऋणों की अदायगी, उपचार, विवाहों, बच्चों की शिक्षा, कृषिय निवेश, गृह-निर्माण इत्यादि के लिए किया जाता है। बिहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, इत्यादि के हजारों निर्धन गाँवों की अर्थव्यवस्था के लिए ये हुंडियाँ जीवनदायक रक्त का काम करती हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और उड़ीसा के ग्रामीण क्षेत्रों से पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास कृषि विकास के लिए उनकी हरित-क्रांति कार्ययोजना की सफलता के लिए उत्तरदायी हैं। इसके अतिरिक्त अनियंत्रित प्रवास ने भारत के महानगरों को अति संकुलित कर दिया है। महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु और दिल्ली जैसे औद्योगिक दृष्टि से विकसित राज्यों में गंदी बस्तियों (स्लम) का विकास देश में अनियंत्रित प्रवास का नकारात्मक परिणाम है।

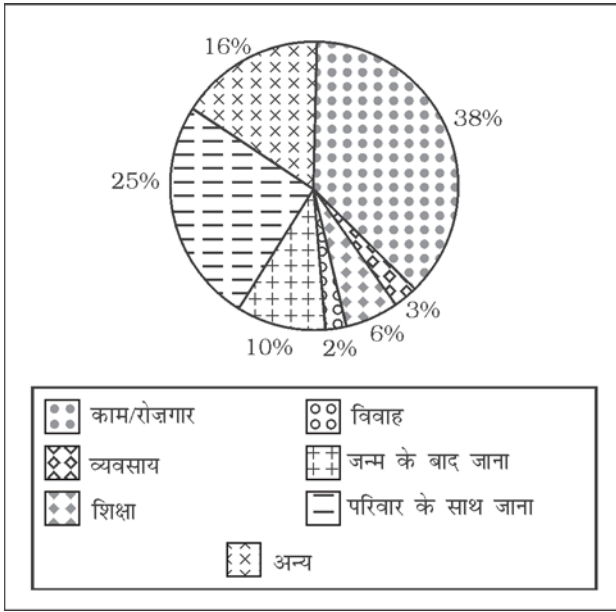
क्या आप प्रवास के कुछ और सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों का नाम बता सकते हैं?

जनांकिकीय परिणाम

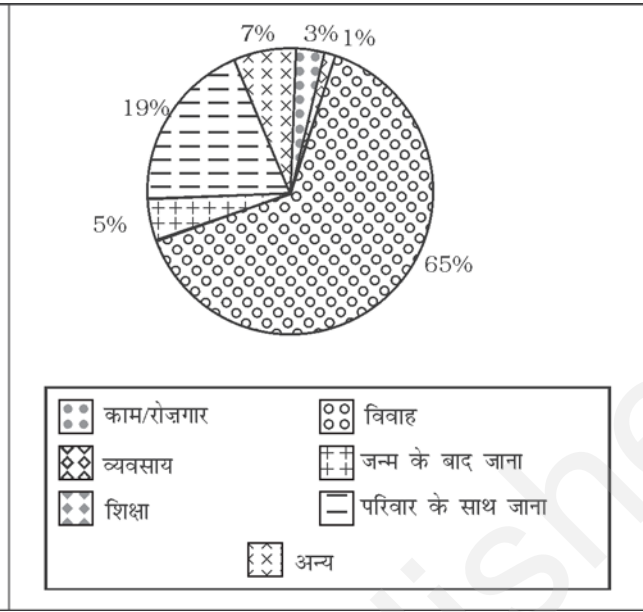
प्रवास से देश के अंदर जनसंख्या का पुनर्वितरण होता है। ग्रामीण नगरीय प्रवास नगरों में जनसंख्या की वृद्धि में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले युवा आयु, कुशल एवं दक्ष लोगों का बाह्य प्रवास ग्रामीण जनांकिकीय संघटन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यद्यपि उत्तरांचल, राजस्थान, मध्य प्रदेश और पूर्वी महाराष्ट्र से होने वाले बाह्य प्रवास ने इन राज्यों की आयु एवं लिंग संरचना में गंभीर असंतुलन पैदा कर दिया है। ऐसे ही असंतुलन उन राज्यों में भी उत्पन्न हो गए हैं जिनमें ये प्रवासी जाते हैं। प्रवासियों के उद्गम और गंतव्य स्थानों में लिंग अनुपात असंतुलित होने का क्या कारण है?

सामाजिक परिणाम

प्रवासी सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ताओं के रूप में कार्य करते हैं। नवीन प्रौद्योगिकियों, परिवार नियोजन, बालिका शिक्षा



चित्र 2.2 क : 0-9 वर्ष अवधि वाले पिछले निवास के अनुसार पुरुष प्रवास के कारण भारत, 2001



चित्र 2.2 ख : 0-9 वर्ष अवधि वाले पिछले निवास के अनुसार स्त्री प्रवास के कारण भारत, 2001

इत्यादि से संबंधित नए विचारों का नगरीय क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर विसरण इन्हीं के माध्यम से होता है।

प्रवास से विविध संस्कृतियों के लोगों का अंतर्मिश्रण होता है। इसका संकीर्ण विचारों को भेदते तथा मिस्र संस्कृति के उद्द्विकास में सकारात्मक योगदान होता है और यह अधिकतर लोगों के मानसिक क्षितिज को विस्तृत करता है। किंतु इसके गुमनामी जैसे गंभीर नकारात्मक परिणाम भी होते हैं जो व्यक्तियों में सामाजिक निर्वात और खिन्नता की भावना भर देते हैं। खिन्नता की सतत भावना लोगों को अपराध और औषध दुरुपयोग (drug abuse) जैसी असामाजिक क्रियाओं के पाश में फँसने के लिए अभिप्रेरित कर सकती है।

पर्यावरणीय परिणाम

ग्रामीण से नगरीय प्रवास के कारण लोगों का अति संकुलन नगरीय क्षेत्रों में वर्तमान सामाजिक और भौतिक अवसंरचना पर दबाव डालता है। अंततः इससे नगरीय बस्तियों की अनियोजित वृद्धि होती है और गंदी बस्तियों और क्षुद्र कॉलोनियों का निर्माण होता है।

इसके अतिरिक्त प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन के कारण नगर भौमजल स्तर के अवक्षय, वायु प्रदूषण, वाहित मल

के निपटान और ठोस कचरे के प्रबंधन जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

अन्य

प्रवास (विवाहजन्य प्रवास को छोड़कर भी) स्त्रियों के जीवन स्तर को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुष वरणात्मक बाह्य प्रवास के कारण पत्नियाँ पीछे छूट जाती हैं जिससे उन पर अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक दबाव पड़ता है। शिक्षा अथवा रोजगार के लिए 'स्त्रियों' का प्रवास उनकी स्वायत्तता और अर्थव्यवस्था में उनकी भूमिका को बढ़ा देता है किंतु उनकी सुभेद्यता (vulnerability) भी बढ़ती है।

स्रोत प्रदेश के दृष्टिकोण से यदि हुंडियाँ (remittances) प्रवास के प्रमुख लाभ हैं तो मानव संसाधन, विशेष रूप से कुशल लोगों का हास उसकी गंभीर लागत है। उन्नत कुशलता का बाजार सही मायने में वैश्विक बाजार बन गया है और सर्वाधिक गत्यात्मक औद्योगिक अर्थव्यवस्थाएँ गरीब प्रदेशों से उच्च प्रशिक्षित व्यावसायिकों को सार्थक अनुपातों में प्रवेश दे रही है और भर्ती कर रही हैं। परिणामस्वरूप स्रोत प्रदेश के वर्तमान अल्पविकास को बल मिलता है।





अभ्यास

1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।
 - (i) निम्नलिखित में से कौन-सा भारत में पुरुष प्रवास का मुख्य कारण है?
(क) शिक्षा (ग) काम और रोज़गार
(ख) व्यवसाय (घ) विवाह
 - (ii) निम्नलिखित में से किस राज्य में सर्वाधिक संख्या में आप्रवासी आते हैं?
(क) उत्तर प्रदेश (ग) महाराष्ट्र
(ख) दिल्ली (घ) बिहार
 - (iii) भारत में प्रवास की निम्नलिखित धाराओं में से कौन-सी एक धारा पुरुष प्रधान है?
(क) ग्रामीण से ग्रामीण (ग) ग्रामीण से नगरीय
(ख) नगरीय से ग्रामीण (घ) नगरीय से नगरीय
 - (iv) निम्नलिखित में से किस नगरीय समूहन में प्रवासी जनसंख्या का अंश सर्वाधिक है?
(क) मुंबई नगरीय समूहन (ग) बँगलौर नगरीय समूहन
(ख) दिल्ली नगरीय समूहन (घ) चेन्नई नगरीय समूहन
2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 30 शब्दों में दें।
 - (i) जीवन पर्यंत प्रवासी और पिछले निवास के अनुसार प्रवासी में अंतर स्पष्ट कीजिए।
 - (ii) पुरुष/स्त्री चयनात्मक प्रवास के मुख्य कारण की पहचान कीजिए।
 - (iii) उद्गम और गंतव्य स्थान की आयु एवं लिंग संरचना पर ग्रामीण-नगरीय प्रवास का क्या प्रभाव पड़ता है?
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में दें।
 - (i) भारत में अंतर्राष्ट्रीय प्रवास के कारणों की विवेचना कीजिए।
 - (ii) प्रवास के सामाजिक जनांकिकीय परिणाम क्या-क्या हैं?

